7	**खरपतवार नियंत्रण:**	• संकरी पत्ती के घास के नियंत्रण के लिए आइसोप्रोटूरॉन @1000 ग्रा/है. या क्लोडिनाफोप @60 ग्रा/है, पिनेक्सोडेन @50 ग्रा/है. या फिनोक्साप्रोप @100 ग्रा/है. सल्फोसल्फ्यूरोन @25 ग्रा/है. या पाइरोक्ससल्फोन @127.5 ग्रा/है. का उपयोग किया जाना चाहिए। जटिल खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4-डी/मेटसल्फ्यूरॉन या सल्फोसल्फ्यूरॉन के साथ आइसोप्रुटुरॉन के संयोजन के बाद बुवाई के 30-40 दिन पश्चात् पर्याप्त मिट्टी की नमी में प्रयोग करना चाहिए।
8	**कीट और रोग नियंत्रण:**	यह किस्म पीला, भूरा और काला रतुआ तथा कई अन्य रोगों के लिए प्रतिरोधी है। यद्यपि फफूंदी रोग जैसे, करनाल बंट और पाउडरी मिल्ड्यू के प्रारंभिक अवस्था दिखने पर रोगों के नियंत्रण के लिए, प्रोपीकोनाजोल/ट्रायडेमेफोन/टेबुकानाजोल @0.1% (1 मिली/लीटर) की दर से छिड़काव करें।
10	**सिंचाई:**	दो सिंचाई। एक बुवाई से पहले और एक सिंचाई बुवाई के 45-50 दिन बाद करें
11	**कटाई:**	फसल पूरी तरह से पक जाने के बाद कटाई और थ्रेसिंग करें। भंडारण से पहले अनाज अच्छी तरह से सुखाना चाहिए।
12	**औसत उपज:**	56.1 क्विंटल/हेक्टेयर सीमित सिंचाई के तहत समय पर बुवाई स्थिति में।
13	**उपज क्षमता:**	83.3 क्विंटल/हेक्टेयर।

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)

1800 180 1891

वेबसाईट : **www.iiwbr.icar.gov.in**

सीड पोर्टल : **www.iiwbrseed.in**

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

विस्तार फोल्डर
87/2022

डी बी डब्ल्यू 296 (करण ऐश्वर्या)

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के लिए गेहूँ की उन्नत किस्म

समय पर बुवाई एवं सीमित सिंचाई के लिए

पंजाब हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)

संकलन एवं सम्पादन

हनीफ खान, ओम प्रकाश, सीएन मिश्रा, गोपालरेड्डी, सतीश कुमार, राज कुमार, ममरुथा एचएम, पूनम जसरोटिया, सुधीर कुमार, ज्ञानेंद्र सिंह एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान

करनाल, 132001 भारत

ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research

Karnal-132001 INDIA

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवँ जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डी बी डब्ल्यू 296 (करण ऐश्वर्या) को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में समय पर बुवाई व सीमित सिंचाई के लिए 'खेती के लिए फसल मानकों पर कृषि फसलों के लिए किस्मों की विमोचन और अधिसूचना के लिए केंद्रीय उप–समिति', एस.ओ. 8 (ई) दिनांक 24 दिसम्बर, 2021 अधिसूचित किया गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू–कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है।

डी बी डब्ल्यू 296 की उत्पादन विशेषताएं

- सीमित सिंचाई (बुवाई के बाद केवल एक सिंचाई) परीक्षणों में इस किस्म की औसत उपज 56.1 क्विं/है. पायी गयी है । इसकी तुलना में पहले की लोकप्रिय किस्मों की उपज पीबीडब्लू 644 (50.1 क्विं/है.), एचडी 3043 (47.5 क्विं/है.) डब्ल्यूएच 1142 (50.6 क्विं/है.), एनआईएडब्ल्यू 3170 (51.6 क्विं/है.) और एचआई 1628 (49.3 क्विं/है.) रही।
- उत्पादन परीक्षणों के तहत इस किस्म द्वारा 83.3 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की रिकॉर्ड पैदावार क्षमता दर्ज की गयी है।
- इस किस्म की पूरे जोन में पैदावार की अच्छी स्थिरता पायी गयी है। डीबीडब्ल्यू 296 ने दी गई सिंचाई के सभी स्तरों के लिए उपज के लिए एक स्थिर व अच्छा प्रदर्शन दिया है।

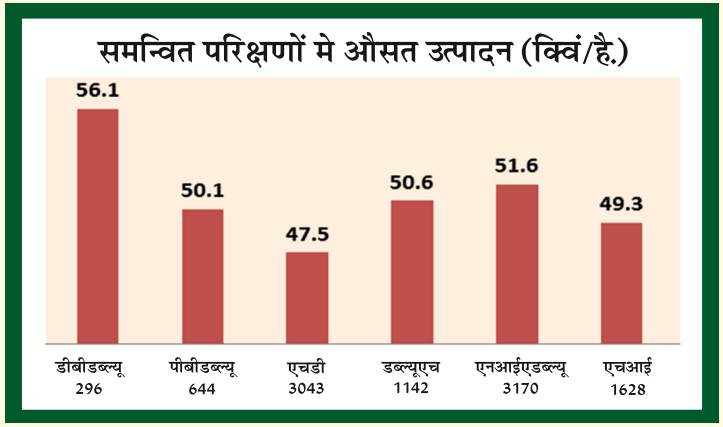

रोग प्रतिरोधिता का स्तर

यह किस्म पीला व भूरा रतुआ के सभी प्रमुख रोगजनक प्रकारो के लिए प्रतिरोधक पायी गयी है।
जीन अभिधारणा ने संकेत दिया कि डीबीडब्ल्यू 296 में भूरे और पीले रतुआ के लिए *Lr23+13+10* और *Yr2+* जीन संयोजन हैं तथा कुछ अज्ञात रतुआ रोधी प्रभावी जीन उपस्थित हैं ।

गुणवत्ता संवर्धन

डीबीडब्ल्यू 296 उत्कृष्ट बिस्किट गुणवत्ता के लिए बहुत उपयुक्त किस्म है क्योंकि इसमें अधिक बिस्किट स्प्रेड फैक्टर (स्कोर 9.5/10) है।
यह नई किस्म उच्च ब्रेड गुणवत्ता (स्कोर 8.2), चपाती–मेकिंग (स्कोर 7.6), ब्रेड लोफ वॉल्यूम (615 मिली) और हेक्टोलीटर वजन (78.6) के कारण कई अंतिम उपयोग (ऐंड–यूज) गेहूँ उत्पादों के लिए उपयुक्त है।
डीबीडब्ल्यू 296 में 10/10 का एक संपूर्ण ग्लू –1 स्कोर है तथा *Glu-D1* सब–यूनिट 5+10 की उपस्थिति मजबूत ग्लूटेन बेहतर ब्रेड बनाने की गुणवत्ता इंगित करती है ।

डी बी डब्ल्यू 296 किस्म की तुलनात्मक विशेषताएं

विशेषता	डीबीडब्ल्यू 296	पीबीडब्ल्यू 644	एचडी 3043	डब्ल्यूएच 1142	एनआईएडब्ल्यू 3170	एचआई 1628
बाली आने की अवधि (दिन)	103	103	104	104	97	96
परिपक्वता अवधि (दिन)	150	149	149	148	147	147
पौधों की ऊंचाई (सेमी)	102	107	105	103	106	106
1000 दानों का वजन (ग्राम)	43	41	37	38	42	42
बिस्किट स्प्रेड फैक्टर	9.5	7.8	7.9	8.1	9.9	7.8
ब्रेड गुणवत्ता	8.20	5.68	7.24	4.47	5.89	7.40

डीबीडब्ल्यू 296 के लिए कृषि पद्धतियों का पैकेज

1	**किस्म की उपयुक्तता क्षेत्र:**	भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (NWPZ) सीमित संचाई के तहत समय पर बुवाई परिस्थिति ।
2	**खेत का चयन व भूमि की तैयारी:**	समतल उपजाऊ मिट्टी स्थिति के लिए बुवाई से पहले सिंचाई के बाद डिस्क हैरो, लेवलर (सुहागा) और टिलर के साथ जुताई करें।
3	**बीज उपचार:**	प्रणालीगत और संपर्क कवकनाशी (कार्बोक्सिन 37.5% + थीरम 37.5%)/ 2–3 ग्राम/किग्रा बीज।
4	**बुवाई का समय:**	25 अक्टूबर से 5 नवंबर तक
5	**बीज दर व बुवाई विधि:**	100 किग्रा/है.। पंक्तियों के बीच 20 सेमी की दूरी, सीड ड्रिल के साथ पंक्ति में बुवाई करें।
6	**उर्वरक मात्रा:**	सीमित सिंचाई के अंतर्गत 90: 60: 40 किलोग्राम एनपीके / हेक्टेयर प्रयोग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। नाइट्रोजन की 1/2 मात्रा बिजाई के समय तथा शेष प्रथम नोड (45–50 दिन बाद) अवस्था में देनी चाहिए।
7	**खरपतवार नियंत्रण:**	• चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4–डी @500 ग्राम/हेक्टेयर या मेटस्ल्फुरोन @ 4 ग्राम/हेक्टेयर या कारफेंट्राजोन @20 ग्राम/हेक्टेयर लगभग 300 लीटर पानी/हेक्टेयर का उपयोग करके छिड़काव किया जा सकता है।